दिनांक 12 सितम्बर, 2016 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ''करमा महोत्सव '' के अवसर पर माननीया राज्यपाल महोदया का अभिभाषण

जोहार!

सर्वप्रथम मैं आप सभी को प्रकृति पर्व 'करमा पूजा' की हार्दिक शुभकामनायें देती हूँ। झारखंड प्रदेश में सम्पूर्ण उत्साह एवं उमंग के साथ मनाये जाने वाले इस प्रमुख त्योहार के अवसर पर मुझे आप लोगों के बीच सम्मिलित होकर अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

2. ''करमा पूजा'' उत्साह एवं उमंग का पर्व है। प्रकृति एवं मानव के बीच गहरे व अटूट तथा अनुपम संबंध को यह परिलक्षित करता है। इस प्रकृति पर्व से जुड़ी लोक–कथाओं में सकारात्मक संदेश निहित है। यह पर्व हम सभी को अपने जीवन में अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देता है। दूसरों के बारे में सदैव सदिच्छा रखना , स्वयं को भी सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाला होता है, जिससे अन्ततः समाज में खुशहाली कायम रहेगी।

3. श्रद्धा एवं भक्ति के साथ करम पेड़ की 'डाल' को आंगन में लगाकर पूजा करना एवं सामूहिक नृत्य एवं संगीत के साथ खुशियाँ मनाना इस पर्व की अहम विशेषता है। हमारा जनजातीय समाज प्रकृति प्रेमी है। प्रायः हर पर्व में प्रकृति के प्रति आस्था व्यक्त की जाती है। आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणीय समस्या से ग्रसित है। Global-Warming के कारण सूखा, अल्पवृष्टि, अनावृष्टि, अत्यधिक गर्मी तथा गलेशियर का पिघलना जैसी घटनायें सामने आ रही है। विभिन्न अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर पर्यावरण संतुलन की दिशा में कार्य करने पर सघन विचार हो रहा है, ताकि मानव एवं अन्य जीव—जन्तुओं की रक्षा हो सकें। ऐसे में 'करमा पर्व' पर्यावरण संतुलन की दिशा में सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

4. झारखण्ड राज्य प्राकृतिक दृष्टिकोण से अत्यन्त समृद्ध है। यहाँ के घने जंगल, झरने, पहाड़ मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करते हैं। हमारे राज्य में इन सब विशिष्ट कारणों से पर्यटन के क्षेत्र में भी असीम संभावनायें हैं।..

विभिन्न क्षेत्रों में Team Work की भावना से काम करते हुए हमारे राज्य को एक "Tourism Hub" के रूप में विकसित किया जा सकता है। इससे कई क्षेत्रों में विकास की गति और तीव्र होगी।

5. यह खुशी की बात है कि प्रदेश में हरियाली बरकरार रहे, इस दिशा में सदैव सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य में सर्व़त्र अधिक–से–अधिक संख्या पेड़ लगाये जा रहे हैं। 'राज भवन' में भी व्यापक तौर पर पौधारोपण करने की दिशा में पहल की गई है। आज हम सभी को अपने प्रकृति की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें सदैव प्रयास करना चाहिये कि अपने आस–पास अधिक–से–अधिक पेड़ लगाकर उसके विकास और संरक्षण हेतु समाज के प्रति अपना व्यक्तिगत योगदान सुनिश्चित करें।

6. हमारी संस्कृति अत्यन्त समृद्ध है। यहाँ विविध धर्म, समुदाय, भाषा तथा संस्कृति के लोग निवास करते हैं। हमारा देश विविधता में एकता का अनुपम एवं सुन्दर उदहारण प्रस्तुत करता है।..

यहाँ की यह भी विशेषता है कि प्रत्येक पर्व—त्योहार सभी समुदाय के लोग एक साथ हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यही सब विशिष्टता हमारी प्रदेश की बहुरंगी संस्कृति एवं भारतवर्ष की विविधता में एकता की मिसाल प्रस्तुत करती है।

7. एक बार मैं पुनः आप सभी को इस 'प्रकृति—पर्व' की बधाई देते हुए सम्पूर्ण राज्य की प्रगति एवं सभी की खुशहाली की कामना करती हूँ।

जय हिन्द्! जय झारखण्ड!